Seventeenth Loksabha

an>

Tile: Regarding need to give Constitutional status to Garhwali,Kumaoni and Jaunsari languages.

श्री तीरथ सिंह रावत (गढ़वाल): माननीय सभापति, मैं आपका धन्यवाद करना चाहता हूं कि आपने मुझे विशेष महत्व के विषय पर बोलने का अवसर दिया।

मैं आपके माध्यम से उत्तराखंड प्रदेश की लोक भाषाएं जैसे गढ़वाली, कुमाउंनी एवं जोनसारी को संवैधानिक दर्जा देने के संबंध में सदन एवं सरकार का ध्यान दिलाना चाहता हूं। उत्तराखंड प्रदेश देवों की भूमि है। यहां लोग सरल एवं आस्थावादी हैं। यहां की रमणीकता एवं सौंदर्यता किसी से छिपी नहीं है। यहां पर तीर्थ स्थलों के साथ पर्यटन स्थल भी हैं। प्रदेश की सौंदर्यता जिस प्रकार है, उसी प्रकार यहां की लोक भाषाएं सुंदर एवं लोकप्रिय हैं। जिस प्रकार अन्य प्रदेशों की प्रचलित लोक भाषाओं, जैसे पंजाबी, गुजराती, बंगाली, कन्नड़, तेलुगू, मराठी, मलयालम आदि को संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित किया गया है, उसी प्रकार उत्तराखंड प्रदेश की गढ़वाली, कुमाउंनी एवं जोनसारी तीनों लोक भाषाओं को संवैधानिक दर्जा दिया जाए।